

श्रीशंकराचार्य उपदेश

साप्ताहिक पत्र

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत । अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

वर्ष ४
अंक ७-८

लखनऊ चन्द्रवार २४ अगस्त १९५३ श्रावण शुक्ल १५ सं० २०१० वि०
श्री शंकराचार्य संवत्सर २४२२

सम्मान्य वार्षिक १५
साधारण वार्षिक ६

अन्नत श्री विभूषित धर्म सम्राट जगद्गुरु शंकराचार्य भगवत्पूज्यपाद
स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी महाराज का उपदेश

अपने आश्रम 'श्री ब्रह्मनिवास' प्रयाग में उपदेश करते हुये महाराज श्री ने कहा—

परमात्मा निष्काम पर प्रसन्न होते हैं ।

इस समय अधिकांश लोग सिद्धियाँ ढूँढ़ते हैं । सिद्धि का समागम चाहते हैं । सिद्धियाँ मिलने के क्या लक्षण हैं ।

योग शास्त्र जन्मौबधमन्त्र तप समाधि ।

कोई तो जन्म से सिद्ध होते हैं । पूर्व जन्म की तपस्या रही परन्तु कोई वासना शेष थी अथवा प्रारब्ध रहा तो इस जन्म में प्रारम्भ से ही सिद्ध होते हैं जड़ भरत का उदाहरण सामने है । आज भी कुछ महात्मा जन्म सिद्ध होंगे ।

औषधि से भी सिद्ध होते हैं । हम लोग जंगलों में रहे हैं जानते हैं । “कण्टकारि द्वयम्” किसी वैद्य ने भटकटैया (छोटी बड़ी) के स्थान पर कण्टकारी (जूता) का काढ़ा तैयार किया । औषधियाँ ऐसी हैं कि आप उनके बल से कल्पपर्यन्त जीवित रह सकते हैं । औषधि से कल्प करते जाओ । जीव तो अजर-अमर है । जब औषधियों से कल्पपर्यन्त रह सकते हो तब छुद्र व्याधियों का क्या कहना ।

गंगाजी के किनारे श्रंगवेरपुर के निकट कौरवेश्वर में रीवाँ राज्य के एक बाबा थे उन्हें पादुका सिद्धि थी । गंगा जल पर चल कर दूसरी ओर से घी ले आये । दूसरे को गुटका सिद्धि थी । वे “अवेरी के बाबा” नाम से प्रसिद्ध थे । औषधि के बल से उसे सिद्धि थी । यह सब लोक-वासना की पूर्ति कर सकती हैं कल्याण नहीं होता ।

मंत्र से भी सिद्धि होती है यदि मंत्र से देवता प्रसन्न हो गया तो जितनी उसकी शक्ति है उतना कार्य वह कर देगा । सर्वशक्तिमान तो परमात्मा है । रामनाम के बल पर सब कुछ किया जा सकता है पर लौकिक बातों की याचना भगवान से मत करो । तैंतीस कोटि देवता इसी-लिए हैं । हल बैल का होता है हस्ती का नहीं ।

परमात्मा निष्काम पर प्रसन्न होते हैं । भगवान राम ने वाल्मीकि से पूछा कि हम कहाँ रहें वाल्मीकि ने कहा कि कौन सा ऐसा स्थान है जहाँ आप न हों । वहीं हम बता दें रहने के लिये । परन्तु आप पूछते हैं तो बताते हैं ।—जो निष्काम प्रेमी है । जिसे कभी कोई वासना

नहीं, कामना नहीं, सहज ही आप से प्रेम करता है वहीं आपका घर है। भगवान उसी से प्रेम करते हैं। जो कामनाशून्य है। अतः छोटे-छोटे काम की चाहना भगवान से न करो। इन कामों के लिये देवता हैं।

हमने जंगलों में देखा है कि शाबर मंत्रों वाले अधिक लोग रहते हैं। एक मंत्र सिद्ध हो जाय तो लौकिक कार्यों में सहायता मिल सकती है।

तप द्वारा सिद्धि हो सकती है। तप कहते हैं “क्लेश उठाते हुए भी साधन करते जाना” तप तीन प्रकार के हैं।—सात्विक, राजस, तामस। मारण, मोहन, उच्चाटन यह तामस भाव के तप हैं। सात्विक तप यह है कि किसी कामना को लेकर तप न किया जाय। सात्विक तप से ज्ञान होता है। राजस से लोभ।

समाधि से भी सिद्धि होती है। समाधि के सम्बन्ध में आजकल लोग बड़े चिन्तित रहते हैं। योगी बनने की बड़ी आतुरता देखी जाती है। परन्तु इन्द्रियों के भोग तो छूटते नहीं, योग करने की इच्छा करते हैं। स्त्री, पुत्र परिवार छूटे नहीं। मन का संयम कर लेने पर स्त्री, पुत्र के मध्य में भी योगाभ्यास हो सकता है।

जिसने वायु को जीता ऐसे गुरु की शरण में रहो तो उसके वाक्यों से तुम्हें सफलता प्राप्त हो सकती है। साधक को लवण, सरसों की वस्तु, अम्ल पदार्थ, तिक्त, रुक्ष, अति उष्ण वस्तुओं को त्यागना चाहिये। गोंद (घृक्ष निर्यास, हींग आदिक) नहीं खाना चाहिये। अग्नि के निकट तथा स्त्री सेवन, पथ सेवन, नहीं रहना चाहिये। प्रातः स्नान तथा उपवास भी निषेध है। वस्त्र इत्यादि बदल कर बैठ जाता है। धूप निकलने पर स्नान करेगा। कायक्लेश नहीं होना चाहिये। प्रारम्भ में दुग्ध और घृत अधिक मिलना चाहिये। सिद्ध होने पर इसकी आवश्यकता नहीं परन्तु साधन में अवश्य चाहिये। परन्तु दुग्ध घृत शुद्ध होना चाहिये, अर्थात् उसके अर्जन का प्रकार ठीक हो। संसारी लोग कामना करके सेवा करते हैं। दुग्ध घृत देंगे तो पचास कामनायें बता देंगे तो साधक की बुद्धि एकाग्र नहीं हो सकती। दुर्योधन का अन्न खाकर भीष्म जैसे महात्मा की भी बुद्धि अष्ट हो गई।

यदि ऐसा सिद्ध गुरु मिल जाय कि वही सब प्रबन्ध

करदे तो हमारा योग चल सकता है। आजकल आहार की अशुद्धि के कारण योग सिद्ध नहीं हो रहा है। योगाभ्यास तो दूर की बात, साधारण माला लेकर बैठते हो तो मन भागा भागा फिरता है क्योंकि आहार बिगड़ा है। खाना ऐसा भी खा सकते हो जैसा किसी गँवार ने जामुन के साथ गुबरोड़ा भी न छोड़ा। यदि आहार-शुद्धि के साथ जप करोगे तो देवता आपके वश होकर रहेगा। “देवो भूत्वा देव यजेत” अर्थात् आचार विचार, आहार विहार ठीक करके जप करो। हमारे यहाँ प्राचीन काल में स्त्रियाँ भी योग मार्ग में सिद्ध हुई हैं।

निष्काम भक्ति करो। हनुमान ने राम को अपना ऋणी बना लिया। ईश्वर से कुछ न माँगें। हम लोगों का यह अनुभूत नुस्खा है।

× × ×

पुरानों इतिहासों में जो घटनाएँ लिखी हैं कि अमुक महर्षि को तप करते-करते इतना बल प्राप्त हुआ अथवा अमुक का पतन हुआ तो इस पर विचार करना चाहिये।

किसी के पतन की बात उसके परोक्ष में भी नहीं कहनी चाहिये। “सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियं”। किसी अन्धे को अन्धा कहो तो बुरा मानेगा परन्तु उससे सूरदास कहो तो बुरा नहीं मानेगा।

चापलूसी करने की आवश्यकता नहीं है पर अपने शब्दों को ऐसा रखो जो सुनने में प्रिय हों।

विचार यह करना है कि ऋषियों का स्त्रियों को देखकर पतित हो जाना मुख से कहना दोष है।

तब फिर लेखनी में लाना तो और भी बुरा है। परन्तु वह इसलिये लिखा गया है कि भविष्य में लोग उन दृष्टान्तों को देखकर सतर्क रहें। वह प्रसंग ही न आने दे जो पतन हो।

शास्त्र कहता है कि माता, पुत्री, और भगिनी के साथ भी एकान्त में न बैठें। क्योंकि इन्द्रिय ग्राम बड़ा बलवान है, जब अपनी माता और पुत्री के साथ भी अकेले नहीं बैठना चाहिये तब फिर अन्य स्त्रियों अथवा पुत्रियों के साथ शिमला, मंसूरी में सैर सपाटे करना कहाँ तक उचित होगा।

सत्य और प्रिय बोलेंगे, तो किसी से व्यर्थ विरोध भी नहीं होगा और सत्य बोलते-बोलते बाणी में बल

आयेगा “सत्यं प्रतिष्ठायां वाक सिद्धि” पर जिसे दिनभर बोलना ही बोलना है उसे सत्य और प्रिय वचन कहाँ से मिलेंगे। क्योंकि ऐसे मनोहर वचन जो सत्य भी हों बहुत कम होते हैं। अतः वाणी पर संयम होना चाहिये।

आज कल योग मार्ग की ओर लोगों की रुचि बढ़ रही है। परन्तु योगाभ्यास के पूर्व इन्द्रिय और वाणी पर संयम प्राप्त कर लेना आवश्यक है। सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है, पर जब ठीक उपाय किया जाय। आजकल डाक्टर लोग किसी रोगी को असाध्य बताकर उसे निराश कर देते हैं। परन्तु उसके लिये असाध्य है तो यह नहीं कहा जा सकता कि सबके लिये असाध्य है।

ईश्वर और जीव इस प्रकार हैं जैसे बाग़ और पेड़ यदि बाग़ से पेड़ अलग कर लें तो बाग़ ही न रह जाय। भगवान सनातन धर्म की रक्षा के लिये अवतार लेते हैं। सनातन धर्म समुद्र है और भिन्न २ मतान्तर तरङ्ग। समुद्र से तरंग उठकर बाहर जाती है और वहाँ से गन्दगी समेट लाती है। ईश्वर और जीव में भी समुद्र और तरंग का सम्बन्ध है।

जीव ही सीव है, सीव ही जीव है। सीव परमात्मा को कहते हैं। श्रुति कहती है कि ईश्वर ने सृष्टि को रचा और जीव रूप से उसमें प्रवेश कर गया। “ईश्वरो जीव कलया प्रविष्टो” यह पुराण वाक्य है। जब तक भूसी लगी रहती है तब तक धान है और भूसी अलग होने पर तन्दुल (चावल) हो जाता है। यद्यपि धान में तन्दुल पहले ही था जब तक कर्म लगा है तब तक जीव है कर्म नष्ट होने पर यही सीव है। कर्मपाश में बँधे हो तब तक जीव है। अन्तर करने वाला यही पाश है। धान में अंकुर होता है जल मृत्तिका का योग देने से परन्तु चावल में मनो जल और मृत्तिका का योग दो अङ्कुर नहीं हो सकता। अंकुर होना है गर्भवास में आना। जब जीव ही सीव है तब यह कर्मपाश क्यों न हटाये जो उसे परमात्मा से दूर रखता है।

परन्तु कर्मपाश दूर होगा सत्संग और भक्ति से। सत्संग के अभाव में द्रौपदी यह न सोच सकी कि कृष्ण

भगवान व्यापक हैं। इसीलिये उसने उन्हें द्वारिका से पुकारा। तात्पर्य यह कि अपने इष्टदेव को दूर न मानो। निकट से निकट देखो। यह कर्म पाश दूर किये बिना ही कोई अपने को ब्रह्म समझने लगे तो यह ठीक नहीं। भूसी लगी रहने पर धान को चावल नहीं कहा जा सकता। आज तक किसी को धान उबाल कर खाते नहीं देखा गया। हम अभी तक अंश हैं जब तक यह कर्म रूपी भूसी लगी है।

हनुमान ने यही उत्तर दिया था कि शरीर से आपका दास हूँ, जीव रूप में आपका शिष्य हूँ तथा वस्तु-तत्त्व तो जो आप हैं वही मैं। भक्ति मार्ग द्वारा भी ‘यद्गत्वा न निवर्तन्ते’ कहा गया है। भला भूसी एक बार चावल से अलग हुई तो क्या दुबारा फिर उसमें लगाई जा सकती है। यदि किसी प्रकार उसमें चिपका भी दी जाय तो क्या उसमें अंकुर आयेगा।

बस एक बार ज्ञानाग्नि में कर्म राशि दग्ध की फिर दुबारा कर्म बाधक नहीं हो सकता। प्रारब्ध, संचित, क्रियमाण तीन प्रकार के कर्म हैं। प्रारब्ध कर्म को भोगकर संचित कर्म ज्ञान के द्वारा और क्रियमाण भगवान को अर्पितकर, कर्म बन्धन मुक्त हो जाना चाहिये। क्रियमाण कर्म भगवान को इसलिये अर्पण करना चाहिये कि आप बिना कर्म किये रह नहीं सकते, कहीं उसके फल की इच्छा कर बैठे तो नया बन्धन तैयार हो जायगा।

आजकल वेदान्त पढ़ पढ़कर शुद्धोऽहं, विशुद्धोऽहं करने लगते हैं पर दिवाला निकल गया तो रोते दिखाई देते हैं। ऐसे शुष्क वेदान्ती मत बनो। अपने अधिकार के अनुसार साधन अपनाओ तो निश्चय ही सफलता मिलेगी। वेदान्त निष्ठा की वस्तु है। बकने की वस्तु नहीं। उसकी निष्ठा पुष्ट करने का अभ्यास करो तब ठीक है नहीं तो निर्मली निर्मली जपो तो जल शुद्ध नहीं होगा। दीपक की चर्चा करने से अँधेरा नहीं हटेगा।

आप लोग ऋषियों की सन्तान हो उनका मार्ग अपनाओ तो कल्याण होगा। परानुकरण से पतन ही हुआ है और उससे आगे भी उन्नति की आशा नहीं करनी चाहिये।